DURGA MAHAVIDYALAYA RAIPUR

Topic :- उत्पादन के साधनों की कीमत निर्धारण का आधार

Class – B. A. First semester

Aysha Parveen

Assistant Professor

Economics Department

वितरण का सीमांत उत्पादकता सिद्धांत

- वितरण के सिद्धांत के रूप में सीमांत उत्पादकता सिद्धांत का एक महत्वपूर्ण स्थान पाया जाता है यह वितरण का केंद्रीय सिद्धांत माना जाता है इस सिद्धांत का विचार सर्वप्रथम डेविड रिकॉर्डो प्रस्तुत किया यह सिद्धांत के अनुसार उत्पादन के प्रत्येक साधन का पुरस्कार उसकी सीमांत उत्पादकता के बराबर होता है यह सिद्धांत हमें बतलाता है कि राष्ट्रीय आय में से उत्पत्ति के सभी साधनों का पारिश्रमिक उसकी सीमांत उपयोगिता के अनुसार निर्धारित होता है प्रोफेसर स्टोनियर एवं हेग के शब्दों में उत्पादन के साधनों के मूल्य निर्धारण का सार यह है कि प्रत्येक उत्पादन के साधन की कीमत इसकी सीमांत उत्पादकता पर निर्भर करती है सभी उत्पादन के साधनों पर यह सिद्धांत समान रूप से लागू होता है इसलिए इसे वितरण का मौलिक या मूल सिद्धांत कहते हैं।

वितरण का सीमांत उत्पादकता सिद्धांत का अर्थ

जिस प्रकार प्रत्येक वस्तु की सीमांत उपयोगिता होती है ठीक उसी प्रकार उत्पत्ति के प्रत्येक साधन की सीमांत उत्पादकता का अनुमान लगाया जा सकता है किसी साधन की सीमांत उत्पादकता से हमारा अभिप्राय कुल उत्पादन में की गई उस वृद्धि से होता है जो उसे साधन की अंतिम या सीमांत इकाई के प्रयोग द्वारा प्राप्त होती है किसी एक साधन की सीमांत उत्पादकता को ज्ञात करने के लिए अन्य साधनों को स्थिर रखा जाता है केवल एक विशेष साधन की एक ही इकाई बढ़ाई जाती है इस एक इकाई के बढ़ने से जो उत्पादन में वृद्धि होती है उसे ही सीमांत उत्पत्ति कहा जाता है इसकी कुछ परिभाषाएं नीचे दी गई है-

वितरण का सीमांत उत्पादकता सिद्धांत की परिभाषाएं:-

- प्रोफेसर सैमुअल्सन के शब्दों में- “अन्य साधनों के पूर्ववत रहने पर उत्पादन के किसी एक साधन की सीमांत उत्पत्ति उसे साधन की एक अतिरिक्त इकाई द्वारा उत्पादित की गई अतिरिक्त मात्रा होती है।”
- प्रोफेसर हैंन्सन के मताअनुसार – “किसी साधन की सीमांत उत्पत्ति साहसी की कुल आय में वह वृद्धि है जो उसे साधन की एक अतिरिक्त इकाई को कार्य में लगाने पर प्राप्त होती है।”

- उपर्युक्त परिभाषाओं के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि अन्य साधनों की मात्रा को पूर्ववत रखकर किसी एक साधन की मात्रा में एक इकाई की कमी या वृद्धि करने से कुल उत्पत्ति में जो कमी यह वृद्धि होती है वही साधन की सीमांत उत्पत्ति होती है।इस सीमा उत्पत्ति के बराबर बराबर ही उत्पादक साधन की सेवा का मूल्य देता है क्योंकि पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत साधन की सभी इकाइयों का मूल्य साधन की सीमांत उपयोगिता या उत्पत्ति के द्वारा निर्धारित होता है इसे निम्न उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है:-

भूमि	+	श्रम	+	पूँजी	+	प्रबन्ध	+	साहस	=	कुल उत्पादन
1	+	10	+	5000	+	1	+	1	=	7000 रुपये
1	+	11	+	5000	+	1	+	1	=	7080 रुपये
एक श्रमिक का पारितोषिक									=	80 रुपये

स्पष्टीकरण:-

- इस प्रकार एक श्रमिक की वृद्धि करने से कुल उत्पादन में ₹80 की वृद्धि होती है अथवा श्रमिक की मजदूरी 80 रुपए निश्चित होगी इसी प्रकार उत्पादन के अन्य साधनों के भी पारिश्रमिक का अनुमान लगाया जा सकता है अथवा वितरण के सीमांत उत्पादकता सिद्धांत के अनुसार राष्ट्रीय आय में से उत्पादन के प्रत्येक साधन को उसका पुरस्कार उसकी सीमांत उत्पादकता के बराबर होता है।

सीमांत उत्पादकता सिद्धांत की मान्यताएं:-

- साधन की प्रत्येक इकाइयां एक समान होनी चाहिए।
- उत्पादन के प्रत्येक साधन की मात्रा को परिवर्तित करना संभव होना चाहिए।
- विभिन्न साधनों को एक दूसरे के स्थान पर प्रतिस्थापन योग्य होना चाहिए।
- बाजार में पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति मानी जानी चाहिए ।
- उत्पत्ति के सभी साधनों में पूर्ण गतिशीलता पाई जानी चाहिए ।
- व्यवसाय एवं उद्योगों में क्रमागत उत्पत्ति ह्रास नियम लागू होना चाहिए।
- साधनों के नियोजन के लिए व्यापक क्षेत्र होना चाहिए ।

सीमांत उत्पादकता सिद्धांत की आलोचनाएं:-

- साधन विशेष की सीमांत उत्पादकता को जानना कठिन-
- साधनों की सेवाओं का ठीक-ठाक माप नहीं –
- साधनों के उपयोग में परिवर्तन संभव नहीं विभिन्न इकाइयों में एकरूपता का अभाव :-
- पूर्ण प्रतियोगिता का अभाव-
- सदनों में गतिशीलता का अभाव-
- पूर्ण पक्ष की अवहेलना-
- साहसी के प्रतिफल में यह सिद्धांत विफल:-
- अल्पकालीन व्याख्या का अभाव-
- पृथक सिद्धांत की आवश्यकता नहीं-

THANK YOU!